gekj Ldy e ikB;iLrd ugh gA

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में पाठ्यपुस्तकों का उपयोग क्यों नहीं किया जाता इसे जानने के पहले हमें इसके उपयोग को जानना होगा। हमें जानना होगा, कि इसे किस तरह तैयार किया जाता है एवं जिन स्कूलों में इसका उपयोग होता है, वहाँ इसके कारण क्या होते है।

एक अध्ययन के दौरान पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों के निर्माताओँ से यह जानने की चेष्टा की गई कि वे कैसे बनाते है पाठ्यक्रम? जबाव था कि हमे छुटपन में ही बच्चों को बहुत कुछ पढा देना है ताकि वे कदम से कदम मिलाकर आज के ज्ञान विज्ञान की आगे बढती धारा के साथ चल सके।

आज हमारे देश की तुलना उन देशों से की जा रही है, जो तब गुफाओं से निकल रहे थे जब हमारे यहाँ साहित्य का विकास हो चुका था। और आज हमें उनके साथ चलना सीखना है। आज जिन स्कूलों में इसका इस्तेमाल होता है वहाँ साल के शुरू में ही बच्चों को क्या–क्या और कितने समय में पढ़ाना है इसे निश्चित कर लिया जाता है और शिक्षक निश्चित अवधि के अन्दर इसे पूरा करने की कोशिश करता है। इस प्रक्रिया में

उदय सामुदायिक पाठशाला ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

साथ ही हमारा यह भी मानना है, कि ज्ञान का अर्थ यदि सूचना एवं जानकारी के रूप में लिया जाए तो ज्ञान का दायरा एकदम सिमट कर छोटा हो जाता है, और ज्ञान का ऐसा कोई अर्थ निकालना जिससे संतोष हो संभव ही नहीं हो पाता। इसीलिए हम मानते है कि ज्ञान की खोज एक ताजे मन से खुली तबीयत से करनी चाहिए इससे बच्चों की अवधारणाएँ तो स्पष्ट होती ही हैं, साथ ही उनकी क्षमताओं का वर्धन भी होता है।

शिक्षक पहले बच्चों को पाठ पढ़वाता है, और फिर पाठ के अन्त में दिए गए प्रश्नों को हल करवाता है। बच्चे इसे रटते हैं और परीक्षा में हूबहू लिखने का प्रयास करते हैं, इससे बच्चों की रचनात्मक क्षमता को तो बढ़ावा नहीं ही मिल पाता है, साथ ही उन्हें बना बनाया, मिले इसकी भी आदत पड़ जाती है।

आज पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से बच्चों को तरह–तरह की जानकारियाँ दी जाती है जैसे– दुनिया की सबसे बड़ी मछली कौन सी है? सबसे छोटा पक्षी कौन सा है? मेघालय की राजधानी क्या है? इत्यादि। देखते ही देखते बच्चों का बचपन एक अर्नगल तथ्य बन कर रह गया है, जिसमें कहीं बचपन का उल्लास एवं बचपन की स्वच्छंदता के अवशेष भी नहीं दिखाई देते। आज आप कहीं भी जाइये बच्चे आपको तरह–तरह के तथ्य रटते एवं शिक्षकों को सुनाते दिखाई देंगे। इस तरह आज बच्चों का दिमाग एक टेलिफोन डायरेक्ट्री बन गया है, जिसमें असंख्य किस्म की सूचनाएँ दर्ज है।

आज पाठ्यपुस्तको के इस्तेमाल से शिक्षक को भी अगले दिन क्या और कैसे पढ़ाना है, इस पर विचार नहीं करना पड़ता है। साथ ही ये शिक्षकों को भी स्वतंत्र रूप से कार्य करने से रोकती है, आज की शिक्षा प्रणाली में यदि शिक्षक अतिरिक्त

सामग्री से पढ़ाना भी चाहता है, तो इसे उच्च अधिकारियों द्वारा नियमों का उल्लघंन माना जाता है, अतः शिक्षक पाठ्य पुस्तकों को ही एक मात्र साधन मानकर काम करने लगता है और इससे बाहर निकलने का प्रयास भी छोड़ देता है। इससे शिक्षक का कार्य उबाऊ एवं नीरस हो जाता है, और वह कुछ भी नया करने का प्रयास छोड़ देता है, इस तरह शिक्षा शिक्षक एवं बच्चों दोनों के लिए ही एक आफत बन जाती हैं।

इस तरह के शिक्षा प्रणाली की एक और समस्या यह होती है, कि पाठ्यपुस्तकों में किसी भी घटना को सिर्फ एक दृष्टिकोण से ही दिखाया जाता है, जबकि सच्चाई यह है कि एक ही घटना को कई दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है, परन्तु शिक्षक भी सिर्फ पाठ्यपुस्तक को ही सही मानकर उसे वैसे ही बच्चों के सामने पेश करता है, इसका परिणाम यह होता है कि अन्य दृष्टिकोणों पर कोई काम नहीं होता है, अतः यह पाठ्यपुस्तकें बच्चों एवं शिक्षकों की सोच निर्धारित करती है।

बच्चों एवं शिक्षकों की इन्ही समस्याओं को ध्यान में रखते हुए "उदय सामुदायिक पाठशाला" में पाठ्यपुस्तकों का इस्तेमाल नहीं होता है। अब आप यह सोचेंगे कि बिना पुस्तकों के काम

कैसे होगा? हम आपको बता दे, कि हम पाठ्यपुस्तकों का विरोध करते हैं, पुस्तकों का नही।

हमारे यहाँ भाषा शिक्षण सीखाने के लिए स्थानीय शब्दों से काम शुरू किया जाता है, इसे जानना, समझना बच्चों के लिए आसान होता है, इन्ही शब्दों की ध्वनि तोड़कर वर्णों की पहचान की जाती है, फिर वर्णों को जोड़कर शब्द और वाक्य बनाने पर शिक्षक और बच्चे मिलकर प्रयास करते है, और आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक शिक्षण सामग्री स्वयं बनाता है, पढ़ना और लिखना सीखने के पश्चात बच्चों को अपनी रूचि के अनुसार किताबें पढ़ने की आजादी होती है और शिक्षक बच्चों द्वारा चुनी हुई कहानियोँ से ही अभ्यास प्रश्न एवं अन्य कार्य करवाता है। इसी प्रकार अन्य विषयों में भी स्थानीय ज्ञान व स्थानीय सामग्री की मदद से कार्य करवाया जाता है। अभ्यास कार्य के लिए बच्चे पुस्तकों की मदद लेते है और जरूरत पड़ने पर शिक्षक अभ्यास पत्र भी स्वयं ही बनाता है, साथ ही शिक्षक किसी सामग्री या टी.एल.एम. की जरूरत पड़ने पर उसे भी तैयार करता है। उपरोक्त कार्य शिक्षक बच्चों की छुट्टी के बाद अपनी योजना (दैनिक) में प्रतिदिन करता है। इस प्रकार पाठ्यपुस्तकों के बिना हमारे स्कूल में कार्य करवाया जाता है।

gekj Ldy e ikB;iLrd ugh gA

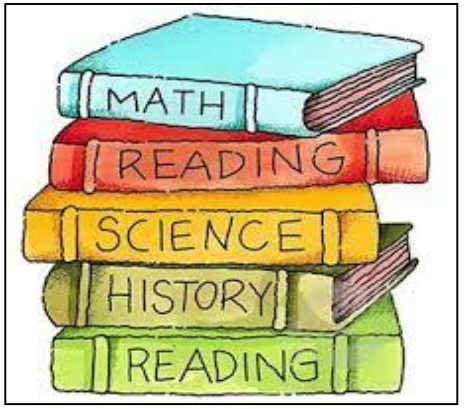

उदय सामुदायिक पाठशाला ग्रामीण शिक्षा केन्द्र